अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 | संख्या 97 | श्री विजय पुरम, रविवार, 12 अप्रैल 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

भारत का ग्रेट निकोबार द्वीप 2047 तक वैश्विक पर्यटन और आर्थिक केंद्र के रूप में उभरेगा

एआई द्वारा निर्मित चित्र

भारत की महत्वाकांक्षी योजना के तहत ग्रेट निकोबार द्वीप को वर्ष 2047 तक एक सशक्त पर्यटन और आर्थिक केंद्र में बदलने की दिशा में कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। 'अमृत काल विज़न 2047' के अंतर्गत इस परियोजना का उद्देश्य एक सामरिक रूप से स्थित शहरी एवं औद्योगिक परिसर का निर्माण करना है, जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास को गति देने के साथ–साथ भारत की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता को भी सुदृढ़ करेगा। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के दक्षिणतम छोर पर स्थित ग्रेट निकोबार द्वीप समुद्री लॉजिस्टिक्स, पर्यटन और अवसंरचना विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

ग्रेट निकोबार द्वीप का सामरिक महत्व

ग्रेट निकोबार द्वीप का भौगोलिक–राजनीतिक स्थान इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाता है। प्रमुख समुद्री मार्गों के निकट स्थित यह द्वीप मलाका जलडमरूमध्य के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जो विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है। भारत सरकार इस सामरिक स्थिति का लाभ उठाकर समुद्री व्यापार और पर्यटन दोनों को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखती है।

यह विकास भारत के समुद्री लक्ष्यों, विशेषकर 'मैरीटाइम इंडिया विज़न 2030' के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य बंदरगाह अवसंरचना को सुदृढ़ करना, तटीय नौवहन मार्गों का विकास करना और टिकाऊ बंदरगाह–आधारित औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना है। इस प्रकार, ग्रेट निकोबार का विकास न केवल वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देगा, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को भी सुदृढ़ करेगा।

अवसंरचना विकास की योजनाएं

ग्रेट निकोबार द्वीप विकास परियोजना के अंतर्गत विभिन्न अवसंरचनात्मक पहलें शामिल हैं, जिनका उद्देश्य द्वीप को एक आत्मनिर्भर और समृद्ध शहरी क्षेत्र में परिवर्तित करना है। प्रमुख योजनाएं निम्नलिखित हैं:

अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट पोर्ट: एक विश्वस्तरीय बंदरगाह की स्थापना, जो बड़े पैमाने पर वैश्विक समुद्री व्यापार को संभाल सकेगा। यह भारत की समुद्री लॉजिस्टिक्स क्षमता को बढ़ाएगा।

हवाई अड्डा एवं कनेक्टिविटी अवसंरचना: एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण, जिससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय यात्रा सुगम होगी तथा माल परिवहन को भी बढ़ावा मिलेगा।

पर्यटन एवं आतिथ्य अवसंरचना: लक्ज़री रिसॉर्ट, पर्यटन पार्क और मनोरंजन स्थल विकसित किए जाएंगे, जो पर्यावरण–अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा देंगे।

आवासीय एवं वाणिज्यिक क्षेत्र: एक नए शहर के निर्माण के तहत आवासीय कॉलोनियां और व्यावसायिक क्षेत्र विकसित किए जाएंगे।

ऊर्जा एवं जल आपूर्ति: सतत विकास सुनिश्चित करने हेतु विश्वसनीय ऊर्जा उत्पादन और जल आपूर्ति प्रणाली विकसित की जाएगी।

सरकार ने परियोजना में पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों को शामिल करने का भी आश्वासन दिया है। हरित अवसंरचना, नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरण–अनुकूल पर्यटन इस योजना के महत्वपूर्ण अंग होंगे, जिससे प्राकृतिक संतुलन बनाए रखा जा सके।

पर्यटन की संभावनाएं

ग्रेट निकोबार द्वीप प्राकृतिक सौंदर्य और आदिवासी संस्कृति से समृद्ध एक अनछुआ स्वर्ग रहा है। इसके स्वच्छ समुद्र तट, घने वन और विविध वन्यजीव इसे पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाते हैं। प्रस्तावित पर्यटन क्षेत्र में इको–टूरिज़्म, एडवेंचर टूरिज़्म और वेलनेस टूरिज़्म को बढ़ावा दिया जाएगा।

यह विकास स्थानीय समुदायों के लिए रोज़गार के अवसर भी उत्पन्न करेगा और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करेगा, साथ ही पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

आर्थिक विकास और रोजगार सृजन

ग्रेट निकोबार विकास परियोजना से द्वीप और आसपास के क्षेत्रों में व्यापक आर्थिक वृद्धि होने की संभावना है। निर्माण और संचालन के दौरान हजारों रोज़गार उत्पन्न होंगे, विशेषकर निर्माण, आतिथ्य, समुद्री संचालन और लॉजिस्टिक्स क्षेत्रों में।

इसके अतिरिक्त, औद्योगिक और व्यापारिक अवसंरचना के विकास से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय निवेश को बढ़ावा मिलेगा, जिससे दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होगी। यह परियोजना एशिया–प्रशांत क्षेत्र के साथ व्यापार को भी मजबूत करेगी।

निष्कर्ष

ग्रेट निकोबार द्वीप को 2047 तक एक वैश्विक पर्यटन और आर्थिक केंद्र में परिवर्तित करना भारत के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसकी सामरिक स्थिति और प्राकृतिक संसाधन भारत को वैश्विक व्यापार में मजबूती प्रदान करेंगे, साथ ही एक सशक्त पर्यटन अर्थव्यवस्था का निर्माण करेंगे। सतत विकास और हरित अवसंरचना पर केंद्रित यह परियोजना भारत की दीर्घकालिक आर्थिक रणनीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनने जा रही है। (स्रोत: : https://www.travelandtourworld.com/)

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, ऑस्टिन–2 में लगा आयुष्मान आरोग्य शिविर

मायाबंदर, 11 अप्रैल

आज आयुष्मान आरोग्य मंदिर, मोहनपुर, मायाबंदर, उत्तर व मध्य अण्डमान के अंतर्गत राजकीय प्राथमिक विद्यालय, ऑस्टिन–2 में स्थानीय लोगों को आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने हेतु आउटरीच आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का नेतृत्व डॉ. आर. पी. अस्पताल, मायाबंदर की चिकित्सा अधिकारी डॉ. ऐलिस ब्वा ने एक बहु–विषयक टीम के साथ किया। टीबी मुक्त भारत अभियान 2.0 के तहत 100 दिवसीय अभियान के अंतर्गत इस शिविर में टीबी, गैर–संचारी रोग (एनसीडी), एनीमिया, मलेरिया एवं वृद्धावस्था संबंधी रोगों की जांच की गई। इसके साथ ही योग सत्र एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श सत्र भी आयोजित किए गए।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार डॉ. ऐलिस ब्वा ने आम जनता को टीबी, एचपीवी टीकाकरण, लेप्टोस्पायरोसिस, डेंगू तथा गर्मी से संबंधित बीमारियों के बारे में जागरूक किया। शिविर में कुल 45 लाभार्थियों ने भाग लिया। 22 व्यक्तियों की हैंडहेल्ड एक्स–रे मशीन से जांच की गई, जिनमें से 3 मामलों में असामान्यता पाई गई। इसके अतिरिक्त 8 संभावित टीबी रोगियों की पहचान कर उन्हें कफ जांच के लिए भेजा गया। शिविर में सामान्य स्वास्थ्य परामर्श प्रदान किए गए, दवाइयों का वितरण किया गया तथा जिन मरीज़ों को आगे जांच की आवश्यकता थी, उन्हें रक्त जांच एवं कफ परीक्षण हेतु डॉ. आर. पी. अस्पताल, मायाबंदर भेजा गया।

पत्थरगढ्डा में 'खुशी ब्लॉक लेवल फेडरेशन' कार्यालय का उद्घाटन

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्था के निदेशक डॉ. अपूर्वा शर्मा ने सामुदायिक विकास खंड, प्रोथरापुर के अंतर्गत पत्थरगढ्डा में दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई–एनआरएलएम) के तहत गठित स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के 'खुशी ब्लॉक लेवल फेडरेशन' के कार्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रोथरापुर की खंड विकास अधिकारी श्रीमती गुरजीत कौर, खंड स्तरीय कर्मचारी, सीआरपी एवं खुशी बीएलएफ के सदस्य उपस्थित रहे। यह पहल सामुदायिक संस्थाओं को सुदृढ़ करने और सतत आजीविका को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

नव स्थापित बीएलएफ कार्यालय विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के बीच समन्वय का केंद्रीय केंद्र होगा। यह बैठकों की योजना बनाने, अभिलेखों के संधारण तथा समूहों और उच्च अधिकारियों के बीच सुचारू संवाद सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगा। कार्यालय में एक समर्पित विक्रय केंद्र भी स्थापित किया गया है, जो एसएचजी सदस्यों को अपने उत्पादों के विपणन एवं बिक्री का मंच प्रदान करेगा, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी।

इसके अतिरिक्त, यह कार्यालय एक सामुदायिक संसाधन केंद्र के रूप में भी कार्य करेगा, जहां एसएचजी सदस्य वंचित बच्चों के लिए सायंकालीन ट्यूशन कक्षाएं संचालित करने की योजना बना रहे हैं। इससे आर्थिक सशक्तिकरण के साथ–साथ सामाजिक विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। डॉ. अपूर्वा शर्मा ने खुशी बीएलएफ के सदस्यों एवं पदाधिकारियों को उनके समर्पण और सामूहिक प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने सदस्यों के साथ संवाद करते

शेष पृष्ठ 4 पर

लिटिल अण्डमान प्रो 2026 : दूसरे दिन भी रोमांच चरम पर, फाइनल मुकाबलों की ओर बढ़ी प्रतिस्पर्धा

लिटिल अण्डमान, 11 अप्रैल

लिटिल अण्डमान प्रो 2026 के दूसरे दिन ने भी अपने शानदार और रोमांचक प्रदर्शनों के साथ प्रतियोगिता के स्तर को और ऊंचा कर दिया। सर्फिंग और स्टैंड–अप पैडल बोर्डिंग (एसयूपी) श्रेणियों में प्रतिभागियों ने दमदार प्रदर्शन करते हुए इस आयोजन को भारत के प्रतिस्पर्धी सर्फिंग कैलेंडर में एक प्रमुख प्रतियोगिता के रूप में स्थापित किया। अण्डमान तथा निकोबार पर्यटन विभाग द्वारा सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से आयोजित इस चैंपियनशिप में देश–विदेश के शीर्ष खिलाड़ी भाग ले रहे है। इस टूर्नामेंट को अण्डमान तथा निकोबार पर्यटन विभाग का मजबूत समर्थन प्राप्त है। साहसिक खेलों और सतत पर्यटन को बढ़ावा देने की उनकी निरंतर प्रतिबद्धता ने द्वीपों को सर्फिंग और जल क्रीड़ाओं के वैश्विक केंद्र के रूप में उभरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दिन का सबसे बड़ा आकर्षण सेकेंडरी बैंक में आयोजित एसयूपी टेक्निकल फाइनल रहा, जहां राष्ट्रीय चैंपियनों का ताज पहनाया गया। पुरुष वर्ग में सेकर पचई ने 10:05.02 मिनट का समय लेकर नेशनल एसयूपी चैंपियनशिप 2026 का खिताब अपने नाम किया। उन्होंने राजेश डी (10:26.39) और दिनेश सेल्वमणि (10:37.33) को पीछे छोड़ा। महिला वर्ग में आरती ने 13:53.20 मिनट के समय के साथ जीत हासिल की, जबकि विजयलक्ष्मी इरुलप्पन (14:06.01) और निशी (20:58.96) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं।

सर्फिंग मेन्स ओपन–राउंड 2 में योगेश ए. ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 10. 17 अंक हासिल किए और 1.74 अंकों के अंतर से अपनी हीट जीत ली। सर्फिंग मेन्स ओपन–राउंड 3 में प्रतिस्पर्धा और भी कड़ी हो गई, जहां रमेश बुडिहाल ने दिन का सर्वोच्च स्कोर 16.00 बनाते हुए 11.83 अंकों के बड़े अंतर से अपनी हीट में दबदबा बनाया। वहीं संजय सेल्वमणि ने 13.50 अंक (5.03 के अंतर से जीत) और श्रीकांत डी. ने 11.67 अंक (2.17 के अंतर से जीत) हासिल कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

सर्फिंग विमेन्स ओपन क्वार्टरफाइनल में भी शीर्ष खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन जारी रहा। कमली मूर्ति ने 10.34 अंक (4.91 के अंतर से जीत), श्रृष्टि सेल्वम ने 7.47 अंक (2.4 के अंतर से जीत) और शुगर शांति बनारसे ने 12. 84 अंकों के प्रभावशाली प्रदर्शन (8.64 के अंतर से जीत) के साथ अपनी–अपनी हीट में पहला स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता अब अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी है और तीसरा दिन, जो ग्रैंड फिनाले होगा, जबरदस्त रोमांच का वादा करता है। कार्यक्रम में सर्फिंग मेन्स ओपन के क्वार्टरफाइनल, सेमीफाइनल और फाइनल; सर्फिंग विमेन्स ओपन के सेमीफाइनल और फाइनल; एसयूपी स्प्रिंट मेन्स के सेमीफाइनल और फाइनल; तथा एसयूपी स्प्रिंट विमेन्स का फाइनल शामिल है। खेल, संस्कृति और समुदाय के अद्भुत संगम के साथ लिटिल अण्डमान प्रो 2026 दर्शकों और प्रतिभागियों दोनों को आकर्षित कर रहा है और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की मनमोहक पृष्ठभूमि में एक रोमांचक समापन की ओर अग्रसर है।

मायाबंदर के गांवों के 19 लाभार्थियों को 465 कुक्कुट पक्षियों का वितरण

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग द्वारा कल उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले के मायाबंदर स्थित वेबी गांव के पशु चिकित्सालय के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत मोहनपुर गांव, लताव तथा देवपुर के 19 लाभार्थियों को कुल 465 कुक्कुट पक्षियों का वितरण किया गया। यह वितरण विभाग की चल रही "रोटेशनल वितरण योजना" का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य घर के पिछले हिस्से में कुक्कुट पालन को सशक्त बनाना, ग्रामीण परिवारों के लिए स्थायी अतिरिक्त आय के स्रोत उत्पन्न करना तथा द्वीपों के दूरस्थ क्षेत्रों में पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करना है। लाभार्थियों को गुणवत्तापूर्ण पक्षियों के साथ वैज्ञानिक पालन–पोषण, आहार प्रबंधन, स्वास्थ्य देखभाल तथा जैव–सुरक्षा उपायों संबंधी आवश्यक तकनीकी मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया, ताकि उच्च जीवितता दर और बेहतर उत्पादन सुनिश्चित किया जा सके।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह पहल छोटे और सीमांत किसानों के लिए विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध होगी, क्योंकि

यह कम निवेश में अधिक लाभ देने वाला आजीविका विकल्प प्रदान करती है। घर के पिछले हिस्से में कुक्कुट पालन न केवल घरेलू आय में वृद्धि करता है, बल्कि परिवार के लिए पौष्टिक अंडे और मांस की नियमित उपलब्धता भी सुनिश्चित करता है। विभाग द्वीपों के ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में अधिक से अधिक किसानों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से ऐसे वितरण कार्यक्रमों का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके तहत गुणवत्तापूर्ण चूजों की नियमित आपूर्ति और निरंतर तकनीकी सहयोग प्रदान किया जाता रहेगा।

तरेसा के चुकमाची गांव में नए खेल मैदान का उद्घाटन

ननकौड़ी, 11 अप्रैल

दक्षिण द्वीपसमूह के तरेसा द्वीप के दूरस्थ गांव चुकमाची में अब ऊर्जा, खेल और सामुदायिक एकता के लिए एक नया केंद्र विकसित हो गया है। 8 अप्रैल, 2026 को आयोजित एक संक्षिप्त समारोह में ननकौड़ी के खंड विकास अधिकारी श्री मोहम्मद यूनुस एम. की उपस्थिति में, सामुदायिक प्रतिनिधियों और गांव के बुजुर्गों के साथ एक नए खेल मैदान का उद्घाटन कर इसे जन उपयोग हेतु समर्पित किया गया। इस मैदान का विकास भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय की रोज़गार गारंटी योजना–"विकसित भारत–रोज़गार एवं आजीविका गारंटी मिशन (ग्रामीण)" के अंतर्गत किया गया। इस कार्य में स्थानीय ग्रामीण श्रमिकों की सक्रिय भागीदारी रही, जो सामुदायिक स्वामित्व और सहभागिता की मजबूत भावना को दर्शाता है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य गांव के युवाओं के लिए खेल, मनोरंजन और शारीरिक गतिविधियों हेतु एक सुलभ एवं समर्पित स्थान उपलब्ध कराना है, साथ ही सामुदायिक सहभागिता और समग्र कल्याण को बढ़ावा देना भी है। यह प्रयास स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करने, स्थानीय खेल प्रतिभाओं को निखारने और ग्रामीणों के बीच सामाजिक संवाद एवं एकता के लिए एक साझा मंच प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस कार्य को निकोबार के उपायुक्त श्री अमित काले (आईएएस) द्वारा 1,87,083 रुपये की राशि से स्वीकृति प्रदान की गई, जिसके माध्यम से स्थानीय समुदाय के लिए कुल 503 मानव–दिवस का रोज़गार सृजित हुआ। कार्य का निष्पादन सामुदायिक विकास खंड, ननकौड़ी द्वारा सहायक आयुक्त, ननकौड़ी के समग्र पर्यवेक्षण में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा "एब्नर हैरी मेमोरियल टूर्नामेंट" नामक फुटबॉल प्रतियोगिता का भी शुभारंभ किया गया, जिसमें पांच तुहेट आधारित टीमों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान खंड विकास अधिकारी ने गांव समुदाय को इस नए सार्वजनिक संपत्ति के निर्माण पर बधाई दी और इसके उचित उपयोग एवं सतत रखरखाव सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग ने 1.78 घन मीटर अवैध पड़ाक लकड़ी ज़ब्त की

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग 11 अप्रैल, 2026 को वनपाल श्री मोहम्मद इस्माइल के नेतृत्व में एक टीम, जिसमें वन रक्षक श्री मुजीबुर रहमान, वन रक्षक श्री वीरास्वामी तथा नियमित मजदूर श्री गणेश साहू, श्री सैमुअल, श्री पीटर अलेक्जेंडर एवं श्री अनुतोष बैरागी शामिल थे, ने एक सफल प्रवर्तन अभियान चलाया। इस अभियान के दौरान 1.77 घन मीटर अवैध पड़ाक लकड़ी ज़ब्त की गई। उक्त लकड़ी बिना किसी वैध दस्तावेज़ के तथा भारतीय वन अधिनियम, 1927 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए प्रभाग के अधिकार क्षेत्र में स्थित एक निर्जन स्थान पर संग्रहित पाई गई।

यह अभियान विश्वसनीय स्रोत से प्राप्त पुख्ता सूचना के आधार पर दक्षिण अण्डमान प्रभाग के सहायक वन संरक्षक (मुख्यालय) श्री आर.एस. शरथ के पर्यवेक्षण में संचालित किया गया। यह ज़ब्ती प्रभाग की वन संसाधनों की सुरक्षा तथा पड़ाक जैसी बहुमूल्य प्रजातियों के अवैध व्यापार पर अंकुश लगाने की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार ज़ब्त की गई लकड़ी को अभिरक्षा में लेकर रेंज अधिकारी, टुसनाबाद को सुपुर्द कर दिया गया है

तथा मामले की आगे की जांच जारी है, ताकि इस अपराध में संलिप्त व्यक्तियों की पहचान की जा सके। दोषियों के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिससे भविष्य में वन उपज के अवैध दोहन के प्रयासों को रोका जा सके।

दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग आम जनता से प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में सहयोग करने तथा अवैध वन एवं वन्यजीव उत्पादों से संबंधित किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना हेल्पलाइन नंबर 03192–255228 पर देने की अपील करता है। सूचनादाताओं की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

नशा मुक्त अभियान के तहत मायाबंदर कॉलेज में शपथ समारोह आयोजित

मायाबंदर, 11 अप्रैल

युवा महोत्सव के दौरान महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर व मध्य अण्डमान में "नशा मुक्त अभियान" के अंतर्गत शपथ समारोह का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य युवाओं के बीच नशामुक्त जीवनशैली को बढ़ावा देना है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. वी. आर. मूर्ति ने छात्रों को संबोधित करते हुए नशामुक्त जीवन के महत्व पर प्रकाश डाला। वहीं डॉ. आर. पी. अस्पताल, मायाबंदर की जीडीएमओ (आयुर्वेद) डॉ. प्रियंका इक़बाल ने छात्रों को नशीले पदार्थों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया और ज़िम्मेदार जीवनशैली अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने ही सभी छात्रों को नशा न करने की शपथ भी दिलाई।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस कार्यक्रम में 460 से अधिक छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सामूहिक रूप से नशे से दूर रहने तथा एक स्वस्थ एवं नशामुक्त समाज के निर्माण में योगदान देने का संकल्प लिया। यह पहल प्रशासन की युवाओं के स्वास्थ्य और कल्याण की दिशा में निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

नौका पलटने की आपात स्थिति पर मॉक ड्रिल का सफल आयोजन

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मुख्य सचिव द्वारा विभागों में मासिक मॉक ड्रिल आयोजित करने के निर्देश के अनुरूप, तैयारी को सुदृढ़ करने और अनुशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जहाज़रानी सेवा निदेशालय (डीएसएस) द्वारा नौका पलटने की स्थिति पर मॉक ड्रिल आयोजित की गई। यह अभ्यास आज सुबह 10 बजे मरीन डॉकयार्ड में आयोजित किया गया, जिसमें 'एमएल रामकृष्ण' जलयान के पलटने की काल्पनिक स्थिति का अभ्यास किया गया। यह मॉक ड्रिल डीएसएस के उप निदेशक (प्रभारी) द्वारा, जो इस अभ्यास के घटना कमांडर थे, के समग्र पर्यवेक्षण में संपन्न हुई।

इस अभ्यास में निदेशालय की आपदा प्रबंधन टीम ने सक्रिय भागीदारी निभाई। ड्रिल के दौरान 38 व्यक्तियों, जिन्हें यात्रियों एवं कर्मचारियों के रूप में दर्शाया गया था, को सुरक्षित रूप से यात्री हॉल में निर्धारित सुरक्षित क्षेत्र तक निकाला गया। इस परिदृश्य में समन्वित खोज एवं बचाव अभियान शामिल था, जिसके अंतर्गत टीम आवश्यक उपकरणों जैसे पोर्टेबल डीजी सेट, पंप सेट एवं लाइफ जैकेट के साथ 'एमवी हैरियट' पर सवार होकर आपात स्थिति का सामना करने के लिए पहुंची। अभ्यास के दौरान दो मामूली घायल व्यक्तियों की स्थिति भी दर्शाई गई, जिनका प्राथमिक उपचार स्टैंडबाय पर मौजूद चिकित्सा दल द्वारा फर्स्ट एड किट की सहायता से किया गया। संपूर्ण अभियान समन्वित ढंग से संपन्न हुआ, जिसने प्रभावी प्रतिक्रिया प्रणाली और टीमवर्क का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार जहाज़रानी सेवा निदेशालय यात्रियों, कर्मचारियों

और समुद्री संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार के अभ्यासों के आयोजन के प्रति प्रतिबद्ध है। ऐसे अभ्यासों का उद्देश्य नौका पलटने सहित विभिन्न समुद्री आपात स्थितियों के प्रति तैयारी और लचीलापन विकसित करना है।

चेनपुर पंचायत में बेंत एवं बांस प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

मायाबंदर, 11 अप्रैल

उत्तर व मध्य अण्डमान के मायाबंदर स्थित चेनपुर पंचायत में कल 15 दिवसीय बेंत एवं बांस प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण सामुदायिक विकास खंड, मायाबंदर द्वारा दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई–एनआरएलएम) के अंतर्गत आयोजित किया गया तथा उद्योग विभाग, बकुलतला द्वारा प्रदान किया गया।

इस प्रशिक्षण में कुल 30 स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) सदस्यों ने भाग लिया, जिन्हें बांस हस्तशिल्प से संबंधित विभिन्न कौशल सिखाए गए, जिससे उनकी आजीविका के अवसरों में वृद्धि हो सके और स्वरोज़गार को बढ़ावा मिले।

समापन समारोह में उद्योग प्रोत्साहन अधिकारी श्री एस. आर. विकास मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर तकनीकी सहायक श्री प्रताप गोल्डर एवं क्लस्टर समन्वयक (डीएवाई–एनआरएलएम) श्री सुकांत बिस्वास भी मौजूद रहे। अतिथियों ने प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी की सराहना

करते हुए उन्हें अर्जित कौशल का उपयोग आय सृजन एवं सतत आजीविका विकास के लिए करने के लिए प्रेरित किया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह प्रशिक्षण 27 मार्च से 10 अप्रैल, 2026 तक प्रशिक्षक (बेंत एवं बांस) श्री विजय गांगुली के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंत में चेनपुर पंचायत के प्रधान श्री जॉनसन केरकेट्टा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रतिभागियों को उपहार वितरित किए गए तथा प्रशिक्षण के दौरान तैयार बांस हस्तशिल्प उत्पादों का प्रदर्शन भी किया गया।

राष्ट्रीय रोइंग चैंपियनशिप में द्वीपों की बेटियों ने जीते रजत पदक

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

द्वीपों का नाम रोशन करते हुए अण्डमान तथा निकोबार रोइंग एसोसिएशन का प्रतिनिधित्व कर रही सुश्री बी. हरिता और सुश्री बी. हरिप्रिया ने कटक (ओडिशा) में 8 से 11 अप्रैल तक आयोजित प्रथम अखिल भारतीय इंडोर रोइंग चैंपियनशिप 2026 में रजत पदक (द्वितीय स्थान) हासिल किया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस प्रतिभाशाली जोड़ी ने अंडर–23 लाइट वेट महिला पेयर वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए देशभर के शीर्ष खिलाड़ियों के बीच अपनी ताक़त, तालमेल और दृढ़ संकल्प का उत्कृष्ट प्रदर्शन

किया। उनकी यह उपलब्धि अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह से उभर रही खेल प्रतिभाओं को दर्शाती है और खिलाड़ियों के समर्पण एवं कठोर प्रशिक्षण का परिणाम है।

जहाज़ नालंदा और एमवी कालीघाट का यात्रा कार्यक्रम

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

जहाज़रानी सेवा निदेशालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार जहाज़ नालंदा 14 अप्रैल को सुबह 9 बजे श्री विजय पुरम से ननकौड़ी तथा कछाल होते हुए कैम्पबेल बे जाएगा और 16 अप्रैल को सुबह 6 बजे कैम्पबेल बे से कछाल तथा ननकौड़ी होते हुए श्री विजय पुरम लौटेगा। अनुकूल मौसम की स्थिति पर जहाज़ कछाल बंदरगाह पर लगेगा। एमवी कालीघाट 21 अप्रैल, 2026 को सुबह 9 बजे श्री विजय पुरम से ननकौड़ी होते हुए कैम्पबेल बे के लिए प्रस्थान करेगा और 23 अप्रैल को सुबह 8 बजे कैम्पबेल बे से ननकौड़ी होते हुए श्री विजय पुरम लौटेगा।

एमवी कालीघाट 28 अप्रैल को सुबह 9 बजे श्री विजय पुरम से ननकौड़ी तथा कछाल होते हुए कैम्पबेल बे जाएगा और 30 अप्रैल, 2026 को सुबह 6 बजे कैम्पबेल बे से कछाल तथा ननकौड़ी होते हुए श्री विजय पुरम लौटेगा। अनुकूल मौसम की स्थिति पर जहाज़ कछाल बंदरगाह पर लगेगा।

इस बीच आम जनता एवं यात्रियों को सूचित किया गया है कि जहाज़ एमवी नालंदा 17 अप्रैल, 2026 (शुक्रवार) को सायं 6 बजे हैडो घाट से कोलकाता के लिए प्रस्थान करेगा। यह जहाज़ 24 अप्रैल, 2026 को दोपहर 12 बजे कोलकाता से श्री विजय पुरम के लिए वापसी करेगा। उक्त यात्रा हेतु यात्री टिकटों का वितरण 13 अप्रैल, 2026 (सोमवार) को सुबह 10 बजे से प्रारंभ किया जाएगा। टिकट डीएसएस ई–टिकटिंग पोर्टल **https://dss.andamannicobar.gov.in/eticketing** के माध्यम से ऑनलाइन बुक किए जा सकते हैं, साथ ही स्टार्स टिकट काउंटरों से भी उपलब्ध रहेंगे। यात्रियों की सुविधा के लिए पोर्टल से सीधे जुड़ने हेतु एक क्यूआर कोड भी उपलब्ध कराया गया है।

Scan QR Code to open on mobile.

इग्नू ने जून, 2026 सत्रावधि परीक्षा हेतु परीक्षा प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि बढ़ाई

श्री विजय पुरम, 11 अप्रैल

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने आगामी जून–2026 सत्रावधि परीक्षा (टीईई) हेतु ओडीएल एवं ऑनलाइन कार्यक्रमों के लिए ऑनलाइन परीक्षा प्रपत्र भरने की अंतिम तिथि बिना विलंब शुल्क के साथ 26 अप्रैल, 2026 तक बढ़ा दी है। 27 अप्रैल, 2026 से 30 अप्रैल, 2026 तक परीक्षा प्रपत्र 1100 रुपये विलंब शुल्क के साथ भरे जा सकेंगे। परीक्षा प्रपत्र जमा करने की संपूर्ण प्रक्रिया, भुगतान सहित, ऑनलाइन माध्यम से लिंक **https://ignou.samarth.edu.in/index.php/site/login** पर उपलब्ध है। प्राप्त विज्ञप्ति में शिक्षार्थियों को सूचित किया गया है कि जून–2026 टीईई की संभावित समय–सारणी इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट के घोषणा अनुभाग में अपलोड कर दी गई है। शिक्षार्थियों को सलाह दी गई है कि वे अपनी परीक्षा अनुसूची की जांच कर उसी अनुसार परीक्षा प्रपत्र भरें।

पत्थरगढ्डा में 'खुशी ब्लॉक लेवल

पृष्ठ 1 का शेष

हुए उन्हें विविध आय सृजन गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया तथा ज़मीनी स्तर पर वित्तीय आत्मनिर्भरता और उद्यमिता के महत्व पर ज़ोर दिया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार खंड विकास अधिकारी (प्रोथरापुर) श्रीमती गुरजीत कौर ने कहा कि बीएलएफ कार्यालय की स्थापना स्वयं सहायता समूहों की बढ़ती सशक्तता को दर्शाती है और यह ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण तथा समावेशी विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

ई–निविदा सूचना

कार्यपालक अभियंता, पंचायती राज संस्थान, दक्षिण अण्डमान मण्डल–।, श्री विजय पुरम, दक्षिण अण्डमान, प्रधान, ग्राम पंचायत, मीठाखाड़ी की ओर से, निम्नलिखित कार्यों के लिए उचित श्रेणी के योग्य व अनुभवी ठेकेदारो से मुहरबंद मद दर (के.लो.नि.वि.–8 के प्रपत्र के रूप में) आमंत्रित करते है।

एन. आई. टी. संख्या : क.अ./पी आर आई/एस ए डी–।/डीडब्ल्यू/2026–27/08
कार्य का नाम : मीठाखाड़ी ग्राम पंचायत के अंर्तगत फरारगंज तहसील के ओग्राब्राज गांव में नाले से गाद निकालने का कार्य।
अनुमानित लागत : रु. 17,46,180/–, धरोहर राशि : रु. 34,924/–, कार्य समाप्ति की अवधि : (04) चार माह।
निविदा शुल्क : रु. 500/–, बोली प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 17/04/2026 के अपराहन 3.00 बजे तक।
निविदा प्रपत्र और अन्य विवरण वेबसाइट https://eprocure.andamannicobar.gov.in से प्राप्त किए जा सकते हैं।
टेंडर आई डी : 2026_RDPRI_22666_1

कार्यपालक अभियंता,
पंचायती राज संस्थान, दक्षिण अण्डमान मण्डल–।,
जंगलीघाट, श्री विजय पुरम, दक्षिण अण्डमान

ई–निविदा सूचना

कार्यपालक अभियंता, पंचायती राज संस्थान, दक्षिण अण्डमान मण्डल–।, श्री विजय पुरम, दक्षिण अण्डमान, प्रधान, ग्राम पंचायत, मीठाखाड़ी की ओर से, निम्नलिखित कार्यों के लिए उचित श्रेणी के योग्य व अनुभवी ठेकेदारों से मुहरबंद मद दर (के.लो.नि.वि.–8 के प्रपत्र के रूप में) आमंत्रित करते है।

एन. आई. टी. संख्या : क.अ./पी आर आई/एस ए डी–।/जीईएन/2026–27/09
कार्य का नाम : ई–पटवारखाना के पास मुस्लिम बस्ती में प्रस्तावित इन्डोर मल्टीपरपस स्टेडियम की मौजूदा भूमि का सुधार और विकास, जिसमें मीठाखाड़ी ग्राम पंचायत के अंर्तगत मुस्लिम बस्ती में अशोक घर तक मौजूदा अलोनिवि मुख्य सड़क तुशनाबाद से मौजूदा सी सी फुटपात का नवीनीकरण शामिल है।
अनुमानित लागत : रु. 8,14,619/–, धरोहर राशि : रु. 16,292/–, कार्य समाप्ति की अवधि : (03) तीन माह।
निविदा शुल्क : रु. 500/–, बोली प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 17/04/2026 के अपराहन 3.00 बजे तक।
निविदा प्रपत्र और अन्य विवरण वेबसाइट https://eprocure.andamannicobar.gov.in से प्राप्त किए जा सकते हैं।
टेंडर आई डी : 2026_RDPRI_22669_1

कार्यपालक अभियंता,
पंचायती राज संस्थान, दक्षिण अण्डमान मण्डल–।,
जंगलीघाट, श्री विजय पुरम, दक्षिण अण्डमान

शपथ पत्र

मैं, पिचम्मल पेरियासामी, पत्नी श्री एस. गणेशन, निवासी ऑस्टिनाबाद गांव, श्री विजय पुरम तहसील, दक्षिण अण्डमान जिला, विधिवत शपथपूर्वक यह घोषणा करती हूँ कि :

1. यह कि मेरे पासपोर्ट संख्या R9935054 में मेरा नाम गलती से 'गणेशन' पिचम्मल' दर्ज किया गया है, जबकि मेरे आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम 'पिचम्मल पेरियासामी' दर्ज है।
2. यह कि मेरा वास्तविक एवं सही नाम 'पिचम्मल पेरियासामी' है।
3. यह कि 'गणेशन पिचम्मल' और 'पिचम्मल पेरियासामी' दोनों एक ही व्यक्ति के नाम है।
4. यह कि मैं यह शपथ पत्र अपने पासपोर्ट में नाम संशोधन हेतु संबंधित प्राधिकरण को प्रस्तुत करने के लिए दे रही हूँ, जो सभी प्रयोजनों के लिए आवश्यक है।

उपरोक्त कथन मेरे ज्ञान एवं विश्वास के अनुसार सत्य एवं सही है।

शपथकर्त्ता

बेंगलुरु के आयुर्वेद संस्थान को मिली अंतरराष्ट्रीय मान्यता

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

आयुष मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले बेंगलुरु स्थित केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (सीएआरआई) की क्लिनिकल लैब को आईएसओ 15189:2022 की अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई है। यह उपलब्धि हासिल करने वाला यह केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद का पहला संस्थान बन गया है।

यह मान्यता लैब में होने वाली जांचों की गुणवत्ता, सटीकता और विश्वसनीयता को वैश्विक स्तर पर प्रमाणित करती है। इससे मरीजों को बेहतर और भरोसेमंद जांच सेवाएं मिलेंगी।

आयुष मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में बताया कि संस्थान को राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड से 50 प्रकार के परीक्षणों के लिए मान्यता मिली है। यहां ब्लड शुगर, लिवर, किडनी, थायरॉइड और अन्य महत्वपूर्ण जांच की सुविधा उपलब्ध है। लैब हर साल 1.5 लाख से अधिक परीक्षण करती है और हजारों मरीजों को सेवाएं देती है। रिपोर्ट एसएमएस, ईमेल और व्हाट्सएप के जरिए भी उपलब्ध कराई जाती है।

इस उपलब्धि पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव ने कहा कि आईएसओ 15189:2022 जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मान्यता प्राप्त होने से यह सुनिश्चित होता है कि रोगियों को विश्वसनीय और सटीक निदान सेवाएं मिलें। ये सेवाएं प्रभावी उपचार और बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए आवश्यक हैं। सीएआरआई बेंगलुरु की यह उपलब्धि दर्शाती है कि मंत्रालय किस प्रकार आयुष के बुनियादी ढांचे को गुणवत्ता और विश्वसनीयता के मानक में परिवर्तित कर रहा है।"

आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने कहा, "सीएआरआई बेंगलुरु का जैव रसायन और रुधिर विज्ञान दोनों में आईएसओ 15189:2022 मान्यता प्राप्त करने वाला पहला सीसीआरएएस संस्थान बनना, उच्च गुणवत्ता वाले निदान को पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के साथ एक करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

1000 किलोग्राम के 600 एरियल बम की खरीद करेगी भारतीय वायुसेना

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

स्वदेशी हथियारों के निर्माण और उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार नए इकोसिस्टम के विकास में जुटी है। अधिकांश रक्षा खरीद अब स्वदेशी कंपनियों से की जा रही है, और इसी दिशा में विशेष जोर दिया जा रहा है।

सेना अपनी आवश्यकताओं की जानकारी देश की हथियार निर्माण कंपनियों को देती है। इसी क्रम में भारतीय वायुसेना ने 1000 किलोग्राम के एरियल बम के लिए स्वदेशी कंपनियों से जानकारी मांगी है। खास बात यह है कि वायुसेना को अमेरिकी एमके–84 जैसा शक्तिशाली एरियल बम चाहिए।

इसके लिए वायुसेना और रक्षा मंत्रालय ने एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (ईओआई) जारी किया है। रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया 2020 के तहत 1000 किलोग्राम के एमके–84 के समान एरियल बम के स्वदेशी डिजाइन, विकास और खरीद के लिए रुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित की गई है। यह प्रोजेक्ट पहले मेक–II (इंडस्ट्री फंडेड) श्रेणी के तहत शुरू होगा और बाद में बाई (इंडियन–आईडीडीएम) श्रेणी के तहत इसकी खरीद की जाएगी।

इस परियोजना को दो चरणों में विभाजित किया जाएगा। पहले चरण में प्रोटोटाइप तैयार किए जाएंगे, जबकि दूसरे चरण में स्वदेशी कंपनियों से इनकी खरीद की जाएगी। पहले चरण में कुल 6 प्रोटोटाइप बनाए जाएंगे, जिनमें वास्तविक और डमी दोनों प्रकार के बम शामिल होंगे। इसके बाद उनका परीक्षण किया जाएगा और आवश्यक तकनीकी मानकों को अंतिम रूप दिया जाएगा। इस चरण में कम से कम 50 प्रतिशत सामग्री भारत में निर्मित होना अनिवार्य होगा।

इस बम को इस प्रकार विकसित किया जाएगा कि इसे भारतीय वायुसेना के स्वदेशी, रूसी और अन्य विदेशी विमानों पर आसानी से इस्तेमाल किया जा सके। यह बम अत्यधिक विस्फोटक क्षमता वाला होगा और दुश्मन पर अधिक प्रभाव डालने में सक्षम होगा। वर्तमान में भारतीय वायुसेना के पास इस प्रकार के एरियल बम मौजूद हैं, लेकिन वे विदेशों से खरीदे जाते हैं। पहले चरण के बाद दूसरे चरण में लगभग 600 बमों की खरीद की जाएगी।

ईओआई जारी होने से लेकर कॉन्ट्रैक्ट साइन होने तक लगभग 2.5 वर्ष का समय लगेगा, जिसमें डिजाइन, परीक्षण, मूल्यांकन और अन्य प्रक्रियाएं शामिल होंगी। सभी परीक्षण भारत में ही वायुसेना की यूनिट्स या निर्धारित स्थानों पर किए जाएंगे। विभिन्न प्लेटफॉर्म से इन बमों का परीक्षण किया जाएगा।

एमके–84 अमेरिका का एक भारी एरियल बम है, जिसे लड़ाकू या भारी बमवर्षक विमानों से गिराया जाता है। इसका वजन लगभग 900–1000 किलोग्राम (2000 पाउंड) होता है। यह एक जनरल–पर्पस बम है, जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के लक्ष्यों पर किया जा सकता है। इसकी विस्फोटक क्षमता बहुत अधिक होती है, जिससे बड़े स्तर पर नुकसान होता है। आमतौर पर इसका उपयोग दुश्मन के बंकर, इमारतों, रनवे और गोदाम जैसे मजबूत ठिकानों को नष्ट करने के लिए किया जाता है। आधुनिक प्रणालियों के साथ इसे जोड़कर इसे प्रिसिजन (सटीक) बम में भी बदला जा सकता है। यह बम वियतनाम युद्ध के दौरान विकसित किया गया था।

इतिहास रचकर लौटा आर्टेमिस II, चंद्रमा की परिक्रमा कर सुरक्षित पृथ्वी पर आए चारों अंतरिक्ष यात्री

सैन डिएगो, 11 अप्रैल।

नासा का आर्टेमिस II मिशन इतिहास रचकर सफलतापूर्वक धरती पर लौट आया है। एसोसिएटेड प्रेस (एपी) की रिपोर्ट के अनुसार, नासा के आर्टेमिस II मिशन के चार अंतरिक्ष यात्री शुक्रवार शाम को प्रशांत महासागर में स्प्लैशडाउन कर चंद्रमा के चारों ओर की रिकॉर्ड तोड़ यात्रा को समाप्त करते हुए पृथ्वी पर सुरक्षित लौट आए हैं।

ओरियन स्पेसक्राफ्ट में सवार कमांडर रीड वाइजमैन, पायलट विक्टर ग्लोवर, मिशन स्पेशलिस्ट क्रिस्टिना कोच (नासा) और जेरेमी हैंसन (कनाडियन स्पेस एजेंसी) ने लगभग 10 दिन की ऐतिहासिक यात्रा पूरी की।

स्प्लैशडाउन सैन डिएगो तट से करीब 40–60 मील दूर प्रशांत महासागर में हुआ, जहां यूएस नेवी की रिकवरी टीम ने उन्हें तुरंत सहायता प्रदान की।

मिशन की प्रमुख उपलब्धियां– यह अपोलो 17 (1972) के बाद 53 वर्षों में मनुष्यों द्वारा चंद्रमा की पहली यात्रा थी। क्रू ने चंद्रमा के दूर वाले हिस्से को करीब से देखा और मानव इतिहास में सबसे दूर की यात्रा का नया रिकॉर्ड बनाया, लगभग 2,52,756 मील (लगभग 4,06,771 किलोमीटर)। यात्रा के दौरान उन्होंने चंद्रमा की तस्वीरें लीं, वैज्ञानिक अवलोकन किए और एक पूर्ण सूर्यग्रहण का भी साक्षी बने। नासा ने बताया कि ओरियन स्पेसक्राफ्ट वायुमंडल में दोबारा प्रवेश करते समय 32 गुना ध्वनि की गति से आगे बढ़ा और हजारों डिग्री तापमान झेलने के बाद पैराशूट की मदद से धीरे–धीरे 17 मील प्रति घंटे की रफ्तार से पानी पर उतरा। यह मिशन नासा के आर्टेमिस प्रोग्राम का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका लक्ष्य चंद्रमा पर स्थायी मानव बेस स्थापित करना और अंततः मंगल ग्रह पर मानव मिशन भेजना है। आर्टेमिस III में चंद्रमा की सतह पर उतरने की योजना बनाई गई है।

विश्व पार्किंसन दिवस पर एम्स ने बढ़ती बीमारी पर जताई चिंता, सस्ते इलाज की पहल

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

आज विश्व भर में पार्किंसन रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विश्व पार्किंसन दिवस मनाया जा रहा है। यह तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क कोशिकाओं को प्रभावित करने वाला विकार है। इस अवसर पर, अखिल भारतीय आयुर्वेद विज्ञान संस्थान–एम्स, नई दिल्ली ने पार्किंसन रोग के बढ़ते प्रसार और प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। एम्स अगस्त तक फोकस्ड अल्ट्रासाउंड तकनीक प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। यह एक गैर–आक्रामक, बिना चीर–फाड़ वाली प्रक्रिया है जिसमें कंपकंपी का इलाज करने के लिए ध्वनि तरंगों का प्रयोग किया जाता है। दिल्ली एम्स का कहना है इस प्रयोग के बाद पूरे भारत में वह पार्किंसन का सबसे सस्ता उपचार उपलब्ध कराएंगे। एम्स नई दिल्ली में न्यूरोसर्जरी विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख डॉ. पी. शरत चंद्र ने इस बात पर ज़ोर दिया कि पार्किंसन के लक्षण, जो आमतौर पर बुजुर्गों में दिखाई देते हैं, अब तेज़ी से कम उम्र के मरीज़ों में भी देखे जा रहे हैं।

इतिहास के पन्नों में 12 अप्रैल : 1975 में वेस्टइंडीज को हराकर जब भारत ने रचा इतिहास

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

भारतीय क्रिकेट इतिहास में 12 अप्रैल की तारीख एक ऐसी ऐतिहासिक जीत के लिए जानी जाती है, जिसने टीम इंडिया के आत्मविश्वास को नई ऊंचाई दी। साल 1975 में भारतीय क्रिकेट टीम ने वेस्टइंडीज को उसके ही गढ़ में हराकर यादगार जीत दर्ज की थी।

यह मुकाबला पोर्ट ऑफ स्पेन में खेला गया था, जहां विंडीज के कप्तान क्लाइव लॉयड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। उनकी टीम ने पहली पारी में 359 रन बनाए, जिसमें विवियन रिचर्ड्स की 177 रनों की शानदार पारी शामिल थी। भारत की ओर से भागवत चंद्रशेखर ने 6 और कप्तान बिशन सिंह बेदी ने 4 विकेट लिए।

भारत की पहली पारी 228 रन पर सिमट गई, जिससे उसे बढ़त गंवानी पड़ी। इसके बाद विंडीज ने दूसरी पारी में 271/6 पर घोषित कर भारत को 403 रनों का मुश्किल लक्ष्य दिया। उस दौर में चौथी पारी में इतने बड़े लक्ष्य का पीछा करना लगभग असंभव माना जाता था।

लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने शुरुआती झटके लगे, लेकिन सुनील गावसकर (102) और गुंडप्पा विश्वनाथ (112) की शानदार पारियों ने टीम को संभाला। इसके बाद मोहिंदर अमरनाथ (85') और बृजेश पटेल (49') ने धैर्यपूर्ण बल्लेबाजी करते हुए टीम को ऐतिहासिक जीत दिला दी।

यह जीत इसलिए भी खास थी क्योंकि भारत ने पहली बार टेस्ट क्रिकेट में चौथी पारी में 400 से अधिक रनों का लक्ष्य हासिल किया था। उस समय वेस्टइंडीज विश्व की सबसे मजबूत टीमों में गिनी जाती थी, और उसे उसी के घर में हराना किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं था।

आगे चलकर यही आत्मविश्वास भारतीय क्रिकेट के स्वर्णिम दौर की नींव बना। कुछ वर्षों बाद 1983 विश्व कप में कपिल देव की कप्तानी में भारत ने विश्व विजेता बनकर इतिहास रचा, जिसमें फाइनल में फिर से वेस्टइंडीज को ही हराया गया। इस तरह 12 अप्रैल 1975 की जीत भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में हमेशा याद की जाती है।

महत्वपूर्ण घटनाचक्र– 1801 – विलियम कैरी को फोर्ट विलियम कॉलेज आफ कलकत्ता में बांग्ला भाषा का प्रोफेसर नियुक्त किया गया।

1885 – मोहनजोदड़ो की खोज करने वाले प्रसिद्ध इतिहासकार राखलदास बनर्जी का जन्म।

1955 – डाक्टर जोनास साल्क ने पोलियो की दवा ईजाद करने का ऐलान किया।

1973 – सूडान ने अपना संविधान बनाया।

1978 – भारत की पहली डबल डेकर रेलगाड़ी बम्बई के विक्टोरिया टर्मिनल से पुणे के लिए अपनी पहली यात्रा पर रवाना हुई।

1981 – अमेरिकी अंतरिक्ष यान कोलंबिया पहली बार प्रक्षेपित किया गया।

आंध्र प्रदेश का 'मिनी स्विट्जरलैंड', जिसे देखने दुनिया भर से आते हैं सैलानी; एक बार जरूर करें विजिट

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

समुद्र तल से लगभग 900 से 1400 मीटर की ऊंचाई पर बसी अराकू घाटी अपने घने जंगलों, मनमोहक झरनों, और ठंडे मौसम के लिए जानी जाती है। साफ–सुथरा वातावरण और चारों ओर फैली हरियाली इसे एक परफेक्ट टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनाते हैं, लेकिन अराकू सिर्फ अपनी सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि अपने गहरे इतिहास के लिए भी मशहूर है।

क्या आप जानते हैं कि अराकू घाटी तक पहुंचने का सफर भी मंजिल जितना ही सुहाना है? विशाखापट्टनम से अराकू तक की रेल यात्रा को भारत की सबसे खूबसूरत रेल यात्राओं में से एक माना जाता है। जब यह ट्रेन ऊंचे पहाड़ों, गहरी घाटियों और घुप्प अंधेरी सुरंगों से होकर गुजरती है, तो यह सफर पर्यटकों के लिए जीवन भर का एक यादगार अनुभव बन जाता है।

प्रकृति के नजारों के अलावा, अराकू घाटी में लगभग 10 लाख साल पुरानी बोरा गुफाएं भी मौजूद हैं। इन गुफाओं के अंदर प्राकृतिक रूप से बनी चट्टानें और आकृतियां हैं, जिन्हें विज्ञान की भाषा में स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट कहा जाता है। भूगर्भ विज्ञान के नजरिए से ये गुफाएं बहुत ही खास और महत्वपूर्ण हैं।

अराकू घाटी का इतिहास बहुत पुराना है। यह जगह हजारों सालों से गोंड, कोंडदोर, बगता, वाल्मीकि और खोंड जैसी प्राचीन आदिवासी जनजातियों का घर रही है। इन आदिवासियों का जीवन पूरी तरह से प्रकृति, खेती और जंगलों के संसाधनों पर निर्भर रहा है। पुराने समय में, पूर्वी घाट के ये पहाड़ी रास्ते व्यापार और संस्कृति के आदान–प्रदान के लिए बहुत महत्वपूर्ण माने जाते थे, जिन्होंने मानव सभ्यता के विकास में एक बड़ा रोल निभाया है।

इस इलाके का सिर्फ आदिवासी इतिहास ही नहीं, बल्कि बौद्ध धर्म से भी गहरा नाता रहा है। अराकू के पास विशाखापट्टनम में थोटलाकोंडा और बाविकोंडा जैसे प्राचीन बौद्ध विहारों के अवशेष मिले हैं। ये अवशेष लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के माने जाते हैं। समुद्र के पास होने की वजह से यह माना जाता है कि यह क्षेत्र समुद्री व्यापार और बौद्ध धर्म को फैलाने का एक बड़ा केंद्र रहा होगा, जहां बौद्ध भिक्षु रहकर पढ़ाई करते थे।

आज भी अराकू की स्थानीय जनजातियों ने अपनी पुरानी जीवनशैली, लोकगीत, लोकनृत्य और रीति–रिवाजों को पूरी तरह से जिंदा रखा है। उनके त्योहारों, कला और खान–पान में प्रकृति के प्रति उनका गहरा सम्मान साफ झलकता है। पर्यटकों को इस शानदार आदिवासी संस्कृति से रूबरू कराने के लिए यहां 'अराकू ट्राइबल म्यूजियम' बनाया गया है। इस म्यूजियम में जाकर आप आदिवासियों के औजारों, उनके कपड़ों और उनकी परंपराओं को बहुत करीब से देख और समझ सकते हैं।

आज अराकू घाटी दुनिया भर के सैलानियों के लिए इतिहास और प्रकृति को करीब से देखने का एक प्रमुख केंद्र बन चुकी है। इसके अलावा, यहां उगाई जाने वाली ऑर्गेनिक कॉफी पूरे भारत में मशहूर है। बता दें, यह स्वादिष्ट कॉफी यहां की पहचान होने के साथ–साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा भी है।

तन और मन दोनों को शीतलता देती है ककड़ी, गर्मियों में खुद को रखें बीमारियों से कोसों दूर

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

गर्मियों के मौसम में जब गर्मी और लू से परेशानी बढ़ जाती है, तब ककड़ी सबसे अच्छा और सस्ता उपाय साबित होती है। यह न सिर्फ शरीर और मन को ठंडक पहुंचाती है बल्कि कई बीमारियों से बचाव में भी कारगर होती है। ककड़ी को "शीतल फल" भी कहा जाता है क्योंकि इसमें 95 प्रतिशत से ज्यादा पानी होता है।

गर्मियों में हेल्थ एक्सपर्ट ककड़ी के सेवन का सुझाव देते हैं, जिससे गर्मी संबंधित समस्याएं दूर रहती हैं और तन के साथ मन को भी कई फायदे मिलते हैं। ककड़ी शरीर में पानी की कमी दूर करती है। गर्मियों में पसीना ज्यादा आने से शरीर डिहाइड्रेट हो जाता है। ककड़ी खाने से शरीर को प्राकृतिक तरीके से पानी मिलता है। यह पानी, इलेक्ट्रोलाइट्स और खनिजों से भरपूर होती है, जो पूरे दिन एनर्जी बनाए रखती है। गर्मी और लू से बचाव में मददगार है। ककड़ी का सेवन शरीर का तापमान नियंत्रित रखता है। गर्मी में लू लगने की आशंका कम हो जाती है। इसे सलाद, रायता या जूस के रूप में लिया जा सकता है।

वजन घटाने में भी ककड़ी सहायक है। ककड़ी में कैलोरी की मात्रा बहुत कम होती है। इसमें फाइबर भरपूर होता है, जो भूख को कंट्रोल करता है। जो लोग वजन कम करना चाहते हैं, उनके लिए ककड़ी रोजाना का आहार बन सकती है। यही नहीं ककड़ी के सेवन से पाचन शक्ति मजबूत होती है। ककड़ी पाचन तंत्र को सुधारती है। इसमें मौजूद फाइबर कब्ज की समस्या को दूर करता है और गैस व ब्लोटिंग से राहत देता है। नियमित सेवन से पेट स्वस्थ रहता है। यह त्वचा के लिए भी फायदेमंद है। ककड़ी त्वचा को साफ और चमकदार बनाती है। इसमें मौजूद पानी और एंटीऑक्सीडेंट्स त्वचा की सूजन कम करते हैं। गर्मियों में चेहरे पर ककड़ी के टुकड़े रखने से ठंडक मिलती है और सनबर्न से बचाव होता है।

ककड़ी के सेवन के अन्य लाभ की बात करें तो यह ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में मददगार और हड्डियों को मजबूत बनाती है, आंखों की थकान कम करती है और इम्युनिटी बढ़ाती है। हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार, ककड़ी का जूस लें, सलाद में टमाटर, प्याज और नींबू के साथ मिलाकर खाएं। इसे दही के साथ रायता बनाकर ले सकते हैं, साथ ही सैंडविच या रोल्स में इस्तेमाल कर सकते हैं।

एक्सपर्ट्स की सलाह है कि गर्मियों में रोजाना कम से कम एक ककड़ी जरूर खाएं। इसे अच्छी तरह धोकर, छीलकर या बिना छीले दोनों तरह से खा सकते हैं। ककड़ी सस्ती, आसानी से उपलब्ध और बिना किसी साइड इफेक्ट वाली होती है। गर्मी के मौसम में इसे अपने आहार में शामिल करके आप तन और मन दोनों को शीतल रख सकते हैं साथ ही कई स्वास्थ्य समस्याओं से बच सकते हैं।

क्या आप जानते हैं कैसे बनती है एलपीजी? कहां से आती है एलपीजी और कैसे पहुंचती है आपके घर तक

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

हमारे चूल्हों में जलने वाली एलपीजी उसी कच्चे तेल से बनती है, जो खाड़ी देशों से आयात किया जाता है। एलपीजी यानी 'लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस' बहुत ही आसानी से आग पकड़ने वाली हाइड्रोकार्बन गैस होती है। इसे 'लिक्विफाइड' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसे सामान्य दबाव डालकर तरल यानी लिक्विड फॉर्म में बदला जाता है, ताकि इसे सिलेंडरों में आसानी से भरकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सके।

यह तो आप जानते ही हैं कि आपकी रसोई गैस के अंदर एलपीजी होती है, लेकिन यह कोई एक गैस नहीं है, बल्कि गैसों का एक मिश्रण होता है।

गैस के अंदर क्या होता है: इसके अंदर मुख्य रूप से दो गैसें प्रोपेन और ब्यूटेन होती हैं। ये दोनों कार्बन और हाइड्रोजन से मिलकर बनती हैं और हवा यानी ऑक्सीजन के संपर्क में आने पर आसानी से जलती हैं।

केमिकल प्रोसेस: जब हम गैस जलाते हैं, तो एक केमिकल प्रोसेस होती है। इससे कार्बन डाइऑक्साइड, पानी की भाप और ढेर सारी गर्मी यानी एनर्जी निकलती है। यही कारण है कि इस गैस पर खाना बहुत जल्दी पकता है।

आपने अक्सर नोटिस किया होगा कि सिलेंडर से हल्की गैस लीक होने पर एक बदबू आती है, जिसे कई लोग एलपीजी की गंध मानते हैं। हालांकि, आपको यह जानकर हैरानी होगी कि असल में अपने नेचुरल फॉर्म में एलपीजी का न कोई रंग होता है और न ही कोई महक।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि इससे आने वाली गंध किसकी है। दरअसल, सुरक्षा के लिए इसमें 'इथाइल मरकैप्टन' (Ethyl Mercaptan) नाम का एक खास केमिकल मिलाया जाता है, ताकि गैस लीक होने पर हमें तुरंत इसकी तेज बदबू आए, जिससे लीकेज के बारे में पता चल सके।

इस गैस की खासियत है कि थोड़ा–सा दबाव डालने पर यह पानी जैसी लिक्विड हो जाती है। इसलिए प्रेशर पड़ने पर बहुत सारी गैस को एक छोटे से सिलेंडर में आसानी से स्टोर किया जा सकता है।

यह गैस सीधे तौर पर वैसी नहीं होती, जैसे हम इसे इस्तेमाल करते हैं। इसे बनाने के दो मुख्य तरीके होते हैं–

रिफाइनरी प्रोसेस: जब जमीन से कच्चा तेल (Crude Oil) निकाला जाता है और उसे रिफाइनरीज में साफ करके पेट्रोल–डीजल बनाया जाता है, तो उसी प्रक्रिया के दौरान बाई–प्रोडक्ट के रूप में एलपीजी भी निकलती है।

नेचुरल गैस से: इसके अलावा, जब नेचुरल गैस को प्रोसेस किया जाता है, तब उसमें से भी प्रोपेन और ब्यूटेन को अलग कर लिया जाता है।

बनने के बाद, इस गैस को भारी दबाव में लिक्विड बनाकर बड़ी–बड़ी पाइपलाइनों, गैस टैंकरों या पानी के खास जहाजों के जरिए अलग–अलग जगहों में मौजूद बॉटलिंग प्लांट तक पहुंचाया जाता है, जहां से यह सिलेंडरों में भरकर हमारे घर तक आती है।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की उपलब्धि की दुनिया भर में हो रही सराहना, खास तकनीक बनाने वाला बना दुनिया का दूसरा देश

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की ऐतिहासिक सफलता का वैश्विक स्तर पर जमकर सराहना हो रही है। तमिलनाडु के कलपक्कम में स्थित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर(पीएफबीआर) ने सफलतापूर्वक काम करना शुरू कर दिया है। यह भारत के तीन चरणों वाले परमाणु कार्यक्रम के दूसरे चरण की महत्वपूर्ण शुरुआत है।

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के प्रमुख राफेल ग्रासी ने भारत के इस उपलब्धि की जमकर प्रशंसा की है। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई देते हुए कहा कि यह कदम ईंधन की स्थिरता और परमाणु ऊर्जा के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पेरिस स्थित अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) ने भी इसे एक बड़ी तकनीकी उपलब्धि बताया है।

आईईए ने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा कई वर्षों के विकास के बाद हासिल की गई इस महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि के लिए भारत, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और वैज्ञानिकों व इंजीनियरों को बधाई। भारत अब दुनिया का दूसरा ऐसा देश बन गया है जिसके पास यह खास तकनीक है। रूस के अलावा अभी तक कोई भी देश इसे सफलतापूर्वक नहीं चला पाया है। अमेरिका और जापान जैसे देशों ने भी दशकों पहले इस जटिल तकनीक में महारत हासिल करने की कोशिशें छोड़ दी थीं।

यह रिएक्टर छह अप्रैल को रात 8.25 बजे चालू हुआ। इसमें ईंधन के रूप में प्लूटोनियम आधारित मिक्स्ड आक्साइड का इस्तेमाल होता है। रिएक्टर को ठंडा रखने के लिए तरल सोडियम का प्रयोग किया जाता है।

यह अन्य रिएक्टरों के मुकाबले बहुत कम ईंधन खर्च करता है। खास बात यह है कि यह पुराने रिएक्टरों से निकले कचरे का इस्तेमाल ईंधन के रूप में करेगा। इससे परमाणु कचरा कम करने में भी मदद मिलेगी।

यह सफलता भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक होमी जहांगीर भाभा के सपने को पूरा करने की दिशा में बड़ा कदम है। इससे भविष्य में थोरियम आधारित रिएक्टरों को चलाने का रास्ता साफ होगा। यह भविष्य की ऊर्जा जरूरतों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। भारत सरकार ने परमाणु ऊर्जा से 100 गीगावाट बिजली पैदा करने का लक्ष्य रखा है।

अभी भारत की क्षमता 8.7 गीगावाट है। उम्मीद है कि साल 2031–32 तक यह बढ़कर 22.48 गीगावाट हो जाएगी। इस रिएक्टर को भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम ने विकसित किया है। आने वाले महीनों में वैज्ञानिक इस पर कई प्रयोग करेंगे और फिर इसे बिजली ग्रिड से जोड़ दिया जाएगा।

केंद्रीय मत्स्यपालन मंत्री ने नई दिल्ली में समुद्री खाद्य निर्यातकों की बैठक 2026 की अध्यक्षता की

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने नई दिल्ली में समुद्री खाद्य निर्यातकों की बैठक 2026 की अध्यक्षता की। इस दौरान वैश्विक बाजारों तक पहुंच बढ़ाने और निर्यात को मजबूत करने की रणनीति तैयार की गई। बैठक में मंत्री ने कहा कि भारत मूल्य–वर्धित समुद्री खाद्य निर्यात को बढ़ाएगा और विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) तथा खुले समुद्र की क्षमता का बेहतर उपयोग करेगा। साथ ही निर्यातकों के लिए बुनियादी ढांचा और सुविधाएं विकसित करने पर बल दिया गया।

मंत्री ने समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण से निर्यातकों के समर्थन के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों को मजबूत करने का आग्रह किया, ताकि अनुपालन, प्रतिस्पर्धा और निर्यात तैयारी को बढ़ाया जा सके। बैठक में हितधारकों ने कई अहम मुद्दे उठाए, जिनमें कैच सर्टिफिकेट प्रक्रिया को सरल बनाना, अंडमान–निकोबार में समुद्री शैवाल की खेती के लिए अनुमति सुविधा, और उच्च गुणवत्ता वाले फिश फीड के वैज्ञानिक विकास की जरूरत शामिल रही।

इसके अलावा टैरिफ और गैर–टैरिफ बाधाएं, उच्च लागत, कोल्ड चेन की कमी और गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली जैसी चुनौतियों पर भी चर्चा हुई। बैठक में राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, नाबार्ड, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम सहित कई संस्थानों और राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पिछले 11 वर्षों में भारत के समुद्री खाद्य निर्यात में औसतन 7% वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है। यह 2013–14 के 30,213 करोड़ रुपए से बढ़कर 2024–25 में 62,408 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। इसमें झींगा निर्यात का सबसे बड़ा योगदान रहा है। भारत 350 से अधिक समुद्री उत्पादों का निर्यात करीब 130 देशों में करता है। इसमें अमेरिका सबसे बड़ा बाजार है, जहां कुल निर्यात का 36.42% हिस्सा जाता है। इसके बाद चीन, यूरोपीय संघ, जापान और मध्य–पूर्व के देश प्रमुख बाजार हैं।

सरकार निर्यात टोकरी को विविध बनाने और वैश्विक बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाने पर काम कर रही है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत उत्पादन, तकनीक, ट्रेसबिलिटी और कोल्ड चेन जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ाया जा रहा है।

भारत के घरों में है दुनिया के 10 सबसे बड़े गोल्ड रिजर्व से भी ज्यादा सोना, एसोचैम ने घर में पड़े सोने को अर्थतंत्र में शामिल करने की दी सलाह

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

देश की अर्थव्यवस्था की जब भी बात होती है, तो गोल्ड रिजर्व की बात भी प्रमुखता से उठाई जाती है। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के अनुसार भारत के पास फिलहाल दुनिया का आठवां सबसे बड़ा गोल्ड रिजर्व है। देश के केंद्रीय बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के पास 880 टन सोने का भंडार है। हालांकि एसोसिएटेड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया (एसोचैम) का कहना है कि आरबीआई के गोल्ड रिजर्व के अतिरिक्त भारतीय नागरिकों के घर में रखा हुआ सोना दुनिया के 10 सबसे बड़े गोल्ड रिजर्व वाले देश के कुल गोल्ड रिजर्व से भी अधिक है।

एसोचैम की ओर से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि विभिन्न स्रोतों के मुताबिक भारतीय घरों में रखे सोने का अनुमानित मूल्य लगभग पांच लाख करोड़ डॉलर है। व्यक्तिगत संग्रह के रूप में रखे गए सोने का ये भंडार घरों या लोगों की वित्तीय संपत्ति के सबसे बड़े भंडारों में से एक है। अगर सोने की इतनी बड़ी मात्रा को देश के अर्थतंत्र में लगाया जाए, तो ये भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत बड़ी ताकत दे सकती है। एसोचैम की रिपोर्ट में ये भी बताया गया है कि भारतीय परिवारों के पास मौजूद सोने का मूल्य, अमेरिका और चीन को छोड़ कर दुनिया की लगभग सभी अर्थव्यवस्थाओं के सालाना सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से भी अधिक है।

रिपोर्ट के अनुसार यदि घरों में रखे सोने के भंडार से हर साल दो प्रतिशत हिस्से को भी वित्तीय माध्यमों के जरिये देश के अर्थतंत्र में शामिल किया जाए, तो 2047 तक भारत की जीडीपी में इसके जरिये ही 7.5 लाख करोड़ डॉलर तक की बढ़ोतरी की जा सकती है। फिलहाल 2047 तक भारत की जीडीपी के 34 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंचने का अनुमान (कई अलग अलग अनुमानों की मीन वैल्यू) जताया गया है। इसमें अगर घरों में पड़े सोने के दो प्रतिशत हिस्से का भी सालाना योगदान हो जाए, तो भारत की जीडीपी 40 लाख करोड़ डॉलर के स्तर को पार सकती है।

एसोचैम की रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत के घरों में लोगों के पास रखा ज्यादातर सोना फिजिकल फॉर्म में ही है, जिससे देश के अर्थतंत्र में इसकी उपयोगिता सीमित हो जाती है। देश के अर्थतंत्र को और तेजी से आगे बढ़ाने के लिए एसोचैम ने घरों में रखे सोने को मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर और कृषि के विकास जैसे अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में औपचारिक रूप से लगाने की बात पर जोर दिया है।

एलपीजी संकट के बीच इंडक्शन स्टोव के नियमों में राहत, अब 2027 से लागू होंगे नए नियम

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

देश में एलपीजी गैस की सप्लाई पर बढ़ते दबाव के बीच सरकार ने आम लोगों को राहत देने वाला अहम फैसला लिया है. कुकिंग गैस की कमी और अंतरराष्ट्रीय हालात को देखते हुए सरकार अब इलेक्ट्रिक कुकिंग को तेजी से बढ़ावा देना चाहती है. इसी को ध्यान में रखते हुए इंडक्शन स्टोव से जुड़े सख्त नियमों को फिलहाल 6 महीने के लिए टाल दिया गया है. पावर मंत्रालय के मुताबिक, इंडक्शन स्टोव पर लागू होने वाले स्टार लेबलिंग नियम अब 1 जुलाई 2026 की बजाय 1 जनवरी 2027 से लागू होंगे. इस फैसले से कंपनियों को अपने प्रोडक्ट्स को नए मानकों के अनुसार तैयार करने के लिए ज्यादा समय मिलेगा, साथ ही ग्राहकों को भी बेहतर ऑप्शन मिल सकेंगे.

गौरतलब है कि पश्चिम एशिया में चल रहे संकट के कारण गैस की उपलब्धता प्रभावित हुई है. ऐसे में सरकार चाहती है कि लोग गैस के बजाय बिजली से खाना बनाने के विकल्प अपनाएं. इंडक्शन स्टोव इसी का एक आसान और सुरक्षित तरीका है.

स्टार लेबलिंग एक सिस्टम है जिसमें इलेक्ट्रिक उपकरणों को उनकी बिजली खपत के हिसाब से रेटिंग दी जाती है. ज्यादा स्टार का मतलब होता है कि वो उपकरण कम बिजली खर्च करता है. वहीं, अगर किसी उपकरण पर कम स्टार हैं, तो इसका मतलब है कि वो ज्यादा बिजली खर्च करता है. इससे लोगों को समझ आता है कि कौन सा प्रोडक्ट ज्यादा किफायती है.

इंडक्शन स्टोव के अंदर एक खास तरह की कॉइल होती है. जब उस पर कोई धातु का बर्तन रखा जाता है, तो यह कॉइल बिजली के जरिए सीधे बर्तन को गर्म करती है. इसमें गैस की तरह आग नहीं जलती. सबसे खास बात यह है कि जब तक बर्तन नहीं रखा जाता, तब तक स्टोव ठंडा रहता है, जिससे यह काफी सुरक्षित होता है.

इंडक्शन स्टोव के फायदे– कम बिजली की खपत, खाना जल्दी तैयार होता है, गैस के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित, साफ करना बहुत आसान, किचन में धुआं और गर्मी कम फैलती है।

सरकार का यह कदम लोगों को राहत देने के साथ–साथ भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर लिया गया है. आने वाले समय में इंडक्शन स्टोव का इस्तेमाल तेजी से बढ़ सकता है और यह कुकिंग का एक नया सामान्य तरीका बन सकता है.

मुंद्रा बंदरगाह ने भारत के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल निर्यात केंद्र के रूप में रिकॉर्ड बनाया

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

मुंद्रा पोर्ट भारत के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल एक्सपोर्ट हब के तौर पर उभरा है। इस पोर्ट ने एक ही जहाज़ से 6,008 कारों को भेजकर एक नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया है। इस पोर्ट का संचालन अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन करता है, और यह उपलब्धि ऑटोमोबाइल एक्सपोर्ट के क्षेत्र में भारत की बढ़ती ताकत को दर्शाती है। यह घटनाक्रम मैन्युफैक्चरिंग में हो रही वृद्धि और लॉजिस्टिक्स की कार्यकुशलता के बीच मज़बूत तालमेल का संकेत देता है। एक ही जहाज़ में 6,008 वाहनों की रिकॉर्ड खेप भारत के लॉजिस्टिक्स और निर्यात इकोसिस्टम के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह उपलब्धि पोर्ट के उन्नत रोल–ऑन/रोल–ऑफ टर्मिनल की वजह से संभव हो पाई है, जो वाहनों को सीधे जहाज़ों पर ले जाने की सुविधा देता है। इससे ये फ़ायदे होते हैं:– तेज़ लोडिंग और अनलोडिंग, हैंडलिंग लागत में कमी, साथ ही, बड़े पैमाने पर कुशल परिवहन। इस उपलब्धि ने मुंद्रा को भारत के ऑटोमोबाइल निर्यात के लिए एक प्रमुख प्रवेश द्वार के रूप में भी स्थापित किया है।

आयुर्वेद में हजारों साल पुरानी तकनीक है ऑयल पुलिंग; सिर्फ दांत नहीं, गट हेल्थ के लिए भी बेहतर

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में लोग सेहत को नजरअंदाज कर रहे हैं, जिसके चलते कम उम्र में कई तरह की बीमारियां शरीर को जकड़ने लगती हैं। इस कड़ी में अब लोग आयुर्वेद के उपायों को अपनाने लगे हैं। आर्युवेद के उपायों में से एक है ऑयल पुलिंग, जिसे आयुर्वेद में 'कवला' या 'गंडूषा' कहा जाता है। यह हजारों साल पुरानी तकनीक है। इसका मकसद मुंह में मौजूद खराब बैक्टीरिया को बाहर निकालना और दांत, मसूड़े, जीभ और गले को स्वस्थ रखना होता है। अगर इसे रोजमर्रा की दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए, तो यह मुंह और पेट को स्वस्थ रखता है।

नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के मुताबिक, मुंह और गट हेल्थ का सीधा संबंध पूरे शरीर से है। हम जो भी खाते हैं, वह सबसे पहले मुंह से होकर शरीर में जाता है। अगर मुंह में गंदगी, बैक्टीरिया या संक्रमण है, तो उसका असर पेट, पाचन और धीरे–धीरे पूरे शरीर पर पड़ता है। मुंह में मौजूद हानिकारक बैक्टीरिया कई गंभीर बीमारियों की जड़ बन सकते हैं। यह दांतों में सड़न, मसूड़ों में सूजन, सांसों की बदबू और लार से जुड़ी समस्याएं पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा, ये बैक्टीरिया खाने के साथ पेट में पहुंचकर पाचन तंत्र को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। ऑयल पुलिंग इसी समस्या पर काम करती है।

ऑयल पुलिंग के दौरान जब तेल को मुंह में घुमाया जाता है, तो तेल की चिपचिपी प्रकृति खराब बैक्टीरिया को अपनी ओर खींच लेती है। कुछ देर बाद ये बैक्टीरिया तेल में फंस जाते हैं और कुल्ला करने के बाद बाहर निकल जाते

हैं। यही कारण है कि नियमित ऑयल पुलिंग करने से दांत, मसूड़े, जीभ और गला साफ और स्वस्थ रहते हैं। इससे मुंह की बदबू कम होती है, मसूड़ों की सूजन घटती है और दांतों में कैविटी की समस्या भी कम हो सकती है।

ऑयल पुलिंग करने का तरीका बेहद आसान है। एक बड़ा चम्मच तेल लेकर उसे मुंह में डालें और पानी की तरह धीरे–धीरे कुल्ला करें। इसे 15 मिनट तक करना चाहिए। इस दौरान तेल को बिल्कुल भी निगलना नहीं है। जब तेल पतला होकर दूध जैसा सफेद हो जाए, तो उसे थूक दें और गुनगुने पानी से मुंह अच्छी तरह साफ कर लें। इसे सुबह खाली पेट करना सबसे अच्छा माना जाता है, क्योंकि उस समय शरीर और मुंह सबसे ज़्यादा रिसेप्टिव होते हैं।

नारियल तेल, तिल का तेल, या सूरजमुखी तेल का इस्तेमाल ऑयल पुलिंग के लिए किया जा सकता है। इनमें नारियल और तिल का तेल सबसे ज्यादा फायदेमंद माने जाते हैं। हालांकि, अगर किसी को दांतों की गंभीर समस्या है, मुंह में घाव हैं, या ऑयल पुलिंग के बाद जीभ पर सफेद परत दिखने लगे, तो इसे तुरंत रोक देना चाहिए।

मेनोपॉज आखिर कब और क्यों होता है? जानें वो 5 बदलाव जो हर महिला को जानना है जरूरी

नई दिल्ली, 11 अप्रैल।

महिला के जीवन में जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक कई महत्वपूर्ण पड़ाव आते हैं जिनमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बदलाव होना पूरी तरह स्वाभाविक है। किशोरावस्था और प्रजनन आयु के बाद एक ऐसा समय आता है जब महिला का शरीर पुराने तरीके से काम करना बंद कर देता है और प्रजनन क्षमता समाप्त हो जाती है। इस महत्वपूर्ण जैविक प्रक्रिया को मेनोपॉज कहा जाता है।

मेनोपॉज महिला के जीवन का वह चरण है जब उसके अंडाशय में अंडाणु का उत्पादन बंद हो जाता है और माहवारी यानी पीरियड्स पूरी तरह रुक जाते हैं। आमतौर पर यह बदलाव 45 से 55 साल की उम्र के बीच देखने को मिलता है हालांकि कुछ महिलाओं में यह समय से पहले या थोड़ी देरी से भी शुरू हो सकता है। इसे समझना हर महिला के लिए इसलिए जरूरी है ताकि वे समय रहते अपनी सेहत और जीवनशैली में आवश्यक बदलाव कर सकें।

जानकारी के अनुसार मेनोपॉज के दौरान शरीर में कई तरह के बदलाव होते हैं जिन्हें सही उपचार और जीवनशैली से प्रबंधित किया जा सकता है।

मेनोपॉज के शुरुआती दौर में सबसे बड़ा संकेत माहवारी के चक्र में बदलाव है। पीरियड्स का चक्र कभी बहुत लंबा हो जाता है तो कभी छोटा, और अंततः यह पूरी तरह रुक जाता है।

इस समस्या के लिए डॉक्टर की सलाह पर हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी ली जा सकती है। इसके अलावा आहार में पत्तेदार सब्जियां, सोया और फ़्लैक्ससीड को शामिल करना फायदेमंद होता है।

मेनोपॉज के दौरान महिलाओं को अचानक तेज गर्मी महसूस होना और पसीना आने की समस्या होती है जिसे अक्सर रात के समय अधिक महसूस किया जाता है।

इससे बचने के लिए हल्के और आरामदायक कपड़े पहनें और अपने कमरे में वेंटिलेशन का ध्यान रखें। खान–पान में कैफीन और मसालेदार भोजन की मात्रा कम कर देनी चाहिए। योग, ध्यान और गहरी सांस लेने वाली तकनीकों को अपनाकर भी राहत पाई जा सकती है।

हार्मोनल असंतुलन का सीधा असर महिला की नींद और मानसिक स्थिति पर पड़ता है। इसके कारण रात में बार–बार नींद टूटना या अनिद्रा की शिकायत आम हो जाती है।

सोने और जागने का एक निश्चित समय तय करें। रात को सोने से पहले मोबाइल या लैपटॉप का इस्तेमाल कम करें। सोने से पहले गर्म दूध या कैमोमाइल टी पीने से शरीर को शांति मिलती है और नींद बेहतर आती है।

मेनोपॉज केवल एक शारीरिक बदलाव नहीं है बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक रूप से भी महिला को प्रभावित करता है। नियमित व्यायाम और तनाव कम करने वाली तकनीकों के माध्यम से इस दौर को सुखद बनाया जा सकता है। महिलाओं को चाहिए कि वे अपने शरीर में हो रहे बदलावों के प्रति जागरूक रहें और जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

डिस्क्लेमर: इस लेख में दिए गए सुझाव केवल सामान्य जानकारी के लिए हैं। किसी भी स्वास्थ्य समस्या के लिए डॉक्टर से सलाह जरूर लें।